अर्स तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए।
मोमिन जुदागी न सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए।। १५ ।।

मोमिनों के तन में श्री राजजी अर्श करके बैठे हैं, इसलिए इनको झूठी माया का लोभ नहीं सताएगा। मोमिन श्री राजजी महाराज की जुदाई नहीं सहन करेंगे। जैसे दूध और मिश्री मिलकर एक रस हो जाते हैं उसी तरह यह भी एक तन हो जाएंगे।

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के।
कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए।। १६ ।।

हमारे हादी श्री प्राणनाथजी के नसीब में फकीरी लिखी है। जो अपने हादी के कदमों पर कदम रखकर (नक्शे कदम पर चलेंगे) चलेंगे, उन्हीं को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहा जा सकता है।

एक हक बिना कछू न रखें, दुनी करी मुरदार।
अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार।। १७ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज के सिवाय सारी दुनियां को मुरदार समझ कर छोड़ देंगे। इनके दिल में श्री राजजी बैठे हैं और यह अक्षर के पार अक्षरातीत धाम पहुंचेंगे।

महामत कहें ए मोमिनों, ए है अपनी गत।
झूठ वास्ते जुदे ना पड़ें, मोमिन अर्स वाहेदत।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! अपनी यही चाल है। हम घर में एक-दिल है, इसलिए झूठी माया में अलग नहीं होंगे।

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।। १९ ।।

श्री छत्रसालजी कहते हैं कि इन मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के धर्म में जो ईमान लाएगा, उनके ऊपर मैं तन, मन, धन से कुर्बान हो जाऊंगा।

।। प्रकरण ।। ११८ ।। चौपाई ।। १७१९ ।।

राग श्री परज

वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी।
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी।। १ ।।

हे मेरे प्यारे धनी! मैं तुझ पर वारी-वारी जाती हूं। मैं अपने तन के टुकड़े-टुकड़े करके कुंज-निकुंज में विहार करने वाले धाम धनी पर न्यौछावर कर दूं।

सुन्दर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी।। २ ।।

इन दोनों स्वरूपों ने दया करके मुझ पर नजरे-करम किया है। ऐसे श्री राजजी श्री श्यामाजी के सुन्दर स्वरूपों पर मैं वारी-वारी जाती हूं।

इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी।। ३ ।।

इस जहर भरे संसार से कोई भी पार नहीं जा सका। माया का नशा बहुत जोर का चढ़ा है। हे मेरी बहन! मेरे देखते-देखते कईयों ने अपना मनुष्य तन खो दिया।

Nijanand App

कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी।।४।।

काली, कुबुद्धि, कुबड़ी, अपंग, ऐसी कठोर हृदय वाली मैं नारी हूं, जिसकी आत्मा को निर्मल कर बड़ी सरलता से पार उतार दिया।

सुन्दर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी।।५।।

मेरे ऊपर अत्यन्त कृपा करके मुझे सुन्दर स्वरूप और अत्यन्त भाग्यशाली बना दिया। हे मेरे अखण्ड सुख के धनी! मैं ललिता सखी आपके ऊपर करोड़ों बार कुर्बान जाती हूं।

।। प्रकरण ।। ११९ ।। चौपाई ।। १७२४ ।।

राग मारू

साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार।।। टेक ।।

कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर।
अनेक पख देखाए तुम को, छोड़ाए के प्रवार।।१।।

हे साथजी! मैं तुम्हारी बहुत गुन्हेगार हूं। मैंने तुम्हें वाणी सुना-सुनाकर संसार में बेइज्जत कर दिया। तुम्हारे से घर, कबीला छुड़ाकर माया के अनेक दुःख-सुख (पहलू) दिखाए।

कुटम कबीले माहें अपने, बैठे हते करार।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार।।२।।

तुम अपने घर, परिवार में आराम से बैठे थे। तरह-तरह से गवाहियां देकर समझा-बुझाकर तुम्हें तुम्हारे कबीले के सुखों से अलग किया और अपार कष्ट दिए।

अनेक अवगुन मैं किए तुमसों, जिनको नाहीं सुमार।
घर घर के किए मैं तुमको, छुड़ाए फिराए राज द्वार।।३।।

मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से दुःखी किया जिनकी गिनती नहीं है। मैंने तुमसे घर-घर की भीख मंगवाई और राजद्वारों में भटकाया।

जुदे पहाड़ों रुलाए रलझलाए, दे दे सब्दों का मार।
कर उपराजन खाते अपनी, होए घर में सिरदार।।४।।

मेरी वाणी से प्रभावित होने से तुमको भटकाव वाले पहाड़ों में धक्के खाने पड़े। तुम अपने घरों में कमाते खाते घर के मुखिया थे।

सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार।
सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार।।५।।

तुम अपने घर में सुख-शान्ति से बच्चों के साथ प्यार का जीवन बिता रहे थे। यह सब परिवार वाले तुम्हारे दुश्मन बना दिए।

बाल गोपाल माहें खूबी खुसाली, करते मिल नर नार।
सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार।।६।।

अपने बच्चों के साथ घर आनन्द मंगल से खुशी से जीवन बिता रहे थे। उनके सुख के सब साधन छुड़ाकर तुम्हें वह जहर के समान बना दिए।

Nijanand App